Vol III Issue X April 2014 ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

# Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

**Welcome to GRT**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## *International Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

## *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.net**

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052(UIF)
Volume-3 | Issue-10 | April-2014
Available online at www.aygrt.isrj.net

# 1857 के विद्रोह का स्वरूप एवं विकास

**नरेन्द्र कुमार**

असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास) दूरवर्ती शिक्षा निदेशालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

***सारांश :-***

भारत में राष्ट्रीय चेतना के प्रारम्भिक सोपान में 1857 के विद्रोह का काफी ऐतिहासिक महत्व है। इस विद्रोह के स्वरूप के सम्बन्ध में इतिहासकारों में सर्वाधिक मतभेद रहा है, क्योंकि प्रारम्भ में अंग्रेजी साम्राज्यवाद से प्रभावित इतिहासकारों ने इस विप्लव को मात्र एक सैनिक विप्लव कहा है, किन्तु अब यह सर्वमान्य सत्य है कि यह मात्र एक

## ***प्रस्तावना :***

1957 में 1857 के विद्रोह की शताब्दी मनाई गई, तब इस अवसर पर राष्ट्रीय चिन्तकों और शोधकर्ताओं ने इस विषय पर पुनः विचार किया। डॉ॰ एस॰ एन॰ सेन ने '1857' नामक शीर्षक से एक पुस्तक की रचना की, जिसमें उन्होंने कहा है कि 1857 के विप्लव को सैनिक विप्लव कहना गलत होगा। यद्यपि यह विद्रोह एक विद्रोह की भांति आरम्भ अवश्य हुआ था, लेकिन यह न तो सेना तक सीमित रहा और न ही सेना ने इस विप्लव में पूर्णतः भाग लिया। 19वीं॰ शताब्दी के साम्राज्यवादी अंग्रेज लेखकों ने इस विद्रोह को सैनिक विप्लव कहा है। अंग्रेजी साम्राज्यवाद से प्रभावित कुछ भारतीय विद्वानों, जैसेः मुन्शी जीवन लाल, मुईनुदीन, दुर्गा दास बंद्योपाध्याय व सर सैय्यद अहमद खान ने भी इसे सैनिक विद्रोह माना है।[2]

इन सभी मतों के विपरित प्रथम बार 1909 में वीर सावरकर ने इस विप्लव को राष्ट्रीय स्वतंत्रता हेतु युद्ध की संज्ञा दी और कहा कि 1826–27, 1831–32 तथा 1848–54 के सैनिक विद्रोह तो 1857 के विद्रोह की पूर्व अभ्यास मात्र ही थे।[3]

इस विद्रोह के स्वरूप के विषय में प्रारम्भ से ही विद्वानों के भिन्न–भिन्न मत प्रचलित रहे हैं, जैसेः–ईसाईयों के विरुद्ध धार्मिक युद्ध, काले–गौरों के बीच सर्वश्रेष्ठता का संघर्ष, हिन्दू–मुस्लमानों का अंग्रेजों के विरुद्ध षड़यंत्र आदि, किन्तु राष्ट्रवादियों ने इसे सुनियोजित आंदोलन कहा है।

लॉर्ड सैलिसबरी के अनुसार, ऐसा व्यापक आंदोलन चर्बी वाले कारतूसों की घटना का परिणाम नहीं हो सकता, क्योंकि विद्रोह की पृष्ठभूमि में कुछ अन्य विषय भी सहायक थे, जो अपेक्षाकृत स्पष्ट कारणों से अवश्य ही अधिक महत्वपूर्ण थे।4

जॉन लॉरेन्स और प्रो॰ सीले ने 1857 के विद्रोह को सैनिक विद्रोह बताया है। इनका कहना था कि इसे न तो स्थानीय नेतृत्व प्राप्त था और न ही सर्वसाधारण का समर्थन। यह तो एक सरकार विरोधी भारतीय सेना का विद्रोह था।[5]

निसंदेह यह विद्रोह सैनिक विद्रोह से प्रारम्भ अवश्य हुआ था, लेकिन सभी स्थानों पर यह सेना तक सीमित नहीं रहा और समस्त सेना ने इस विद्रोह में भाग लिया हो, ऐसा भी नहीं था। विद्रोही जनता के प्रत्येक वर्ग में से थे और अवध व बिहार से इसे जन समर्थन प्राप्त था।

टी॰ आर॰ होम्स के अनुसार, यह विद्रोह सभ्यता और बर्बरता के मध्य युद्ध था, परन्तु उनके कथन से जातीय कटुता जलकती है। वास्तव में विद्रोह में दोनों पक्ष ही ज्यादतियों के दोषी थे। अंग्रेजों ने कई स्थानों पर भारतीयों के साथ जघन्य अपराध किए, जैसेः– हडसन ने दिल्ली में अंधाधुंध गोलियां चलवाई, इलाहाबाद में मृत्यु का तांडव नृत्य किया गया तथा बनारस में तो मासूम व असहाय बच्चों को भी फांसी पर लटका दिया गया था।[6]

लंदन टाईम्स के संवाददाता रस्सल महोदय ने लिखा था कि मुस्लमान अभिजात वर्ग के लोगों को जिन्दा ही सुअर की कच्ची खाल में सील दिया गया था। अंग्रेजों द्वारा किए गए इस दुर्व्यवहार को ध्यानागत रखते हुए कोई भी बुद्धिजीवी उन्हें सभ्य नहीं कह सकता।[7]

कार्ल मार्क्स औपनिवेशवाद के विरोधी थे। उनकी भारत के इतिहास में रूचि थी। उन्होंने उन राजनैतिक व आर्थिक कारणों को उजागर किया, जिन्होंने 1857 के विद्रोह को आवश्यक बना दिया। वे ब्रिटिश कम्पनी को ही भारत के आर्थिक विनाश का कारण मानते थे। उन्होंने अपनी 'भारत विद्रोह' लेखमाला में लिखा है कि यह अंग्रेजों का दृढ़ विश्वास था कि भारत में उनकी सम्पूर्ण शक्ति का स्त्रोत देश के सिपाहियों की फौज है, परन्तु अब इस विप्लव से यह अहसास हो गया कि फौज ही उनके लिए खतरे का मुख्य स्त्रोत है, किन्तु ये सिपाही केवल साधन थे, विप्लव की मुख्य चालक शक्ति भारत की जनता ही थी, जो असहाय उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष में उठ खड़ी हुई।[8]

आधुनिक भारतीय इतिहासकार डॉ॰ आर॰ सी॰ मजूमदार, डॉ॰ एस॰ एन॰ सेन तथा डॉ॰ एस॰ बी॰ चौधरी जैसे इतिहासकारों ने इस विप्लव से सम्बन्धित उपलब्ध तथा अराजकीय आलेखों का विस्तृत अध्ययन करने के उपरान्त कहा है कि यह विप्लव न तो सचेत योजना का परिणाम था और न ही इसके पीछे कोई सिद्धहस्त व कुशल व्यक्ति था। केवल यह तथ्य कि 1857 में नाना साहिब लखनऊ गए थे, इस बात को प्रमाणित नहीं करता कि उन्होंने इस विद्रोह की योजना बनाई थी और न ही यह सिद्ध होता है कि अजीमुल्ला खां और रांगो बापू ने इस विद्रोह की योजना बनाई थी। अजीमुल्ला खां कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स के समक्ष अंतिम पेशवा बाजीराव द्वितीय को मिलने वाली पेंशन के लिए नाना साहिब की ओर से पेश हुए थे। इसी प्रकार रांगो बापू को भी सतारा को पुनः प्राप्त करने हेतु लंदन भेजा गया था। दोनों व्यक्तियों का लंदन जाना इस बात को प्रमाणित नहीं करता कि उन्होंने षड़यन्त्र में भाग लिया था। इसी प्रकार चपाती और कमल का भिन्न–भिन्न स्थानों पर भेजना किसी निश्चित बात को प्रमाणित नहीं करता।[9]

डॉ॰ एस॰ एन॰ सेन का मत है कि 19वीं॰ शताब्दी के पूर्वार्ध में भारत में केवल एक ही भौगोलिक स्थल था। 1857 में बंगालियों, पंजाबियों, महाराष्ट्रियों और मद्रासियों ने कभी यह अनुभव नहीं किया था कि वे एक ही राष्ट्र के सदस्य व इस विद्रोह के राष्ट्रीय नेता हैं। बहादुर शाह जफर कोई राष्ट्रीय सम्राट नहीं था, उसे तो विद्रोहियों ने ही अपना नेता बनाने को विवश कर दिया था। नाना साहिब ने केवल उस समय विद्रोह का झण्डा उठाया, जब उसका दूत लंदन से उसके लिए बाजीराव द्वितीय की पेंशन प्राप्त करने में असफल रहा। जब विद्रोह आरम्भ हुआ, तब उसने कहा था कि वह अंग्रेजों से बातचीत तब करेगा, जब उसकी पेंशन उसे मिल जाएगी।[10]

अवध का नवाब जो व्याभिचारी व्यक्ति था, वह राष्ट्रीय नेता बनने का स्वप्न कभी ले नहीं सकता था। अवध के तालुकदारों ने सामंतशाही अधिकारों के लिए अथवा अपने नवाब के लिए युद्ध किया, राष्ट्रीय हित के लिए नहीं। इस क्रांति को अवध और बिहार के शाहबाद (आधुनिक भोजपुर) जिले के अतिरिक्त कहीं भी सामान्य समर्थन प्राप्त नहीं था।[11] इस विद्रोह ने भिन्न–भिन्न स्थानों पर भिन्न–भिन्न रूप धारण किया। कुछ प्रदेशों में जैसेः– पंजाब और मध्यप्रदेश में केवल एक सैनिक विद्रोह ही था, जिसमें कालान्तर में कुछ असंतुष्ट व्यक्ति भी गड़बड़ी का लाभ उठाकर शामिल हो गए थे। दूसरी ओर उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश के कुछ भागों में और बिहार के पश्चिमी भागों में सैनिक विप्लव के पश्चात एक सर्वसाधारण विद्रोह हो गया, जिसमें सैनिकों के अतिरिक्त असैनिक विशेषकर रियासतों के विस्थापित शासक, भूमिपति, मुजारे तथा अन्य तत्वों ने भाग लिया।[12] इसके अतिरिक्त राजस्थान और महाराष्ट्र ऐसे थे, जहां पर जनता की सहानुभूति विद्रोहियों के साथ थी, परन्तु उन्होंने कानून की सीमाओं को पार करके किसी पर अत्याचार नहीं किया।

डॉ॰ एस॰ एन॰ सेन 1857 के विद्रोह को राष्ट्रीय विद्रोह की संज्ञा देना उचित नहीं मानते, क्योंकि उनका तर्क था कि क्रांतियां प्रायः एक छोटे से वर्ग का कार्य होती हैं और इसका समर्थन होता भी है और नहीं भी। यदि एक विद्रोह, जिसमें बहुसंख्यक लोग संगठित हो जाएं, तब उसका स्वरूप राष्ट्रीय हो जाता है। दुर्भाग्यवश भारत में अधिकतर लोग तटस्थ और निष्पक्ष रहे, इसलिए 1857 के विप्लव को राष्ट्रीय विद्रोह कहना उचित प्रतीत नहीं होता है।[13]

डॉ॰ आर॰ सी॰ मजूमदार ने इसके स्वरूप निर्धारण में बहादुर शाह जफर, रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहिब, कुंवर सिंह आदि के व्यक्तिगत स्वार्थों को अधिक महत्वपूर्ण बताया है। यदि इन क्रांतिकारियों ने अनिच्छा और विवशता से 1857 के विप्लव में भाग लिया हो, जैसा कि वास्तव में था और यदि क्रांति इन नेताओं के विद्रोह के पूर्व में ही प्रारम्भ हो गई तो केवल इन चार नेताओं के स्वार्थों को इस क्रांति के स्वरूप निर्धारण में प्रमुख नहीं माना जा सकता है।[14]

1857 के विद्रोह का मूल्यांकन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि अंग्रेज विरोधी भावनाएं केवल अंग्रेजों के विरुद्ध ही नहीं थी, बल्कि यह तो अंग्रेज समर्थक भारतीय व्यापारियों, नए भू–स्वामियों तथा बनियों के विरुद्ध भी थी। कृषकों की आर्थिक कठिनाईयों का लाभ उठाकर बनियों ने अंग्रेजी न्याय की सहायता से भूमि पर अधिकार कर लिया था। इसलिए अवध व अन्य क्षेत्रों में कृषकों ने बनियों और नए भू–स्वामियों के विरुद्ध विद्रोह किया था।[15]

अतः हम कह सकते हैं कि यह न तो प्रथम राष्ट्रीय संघर्ष था और न ही स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु विद्रोह, लेकिन इसके निष्कर्षों को अनदेखा नहीं किया जा सकता, क्योंकि इस विद्रोह का राष्ट्रीय महत्व अप्रत्यक्ष और उत्तरकालीन था। किसी भी आंदोलन की लोकप्रियता का अनुमान लगाते समय यह अवश्य ध्यानागत रखना चाहिए कि किसी भी विद्रोह में अल्पसंख्यक वर्ग ही दृढ़ संकल्पवादी होता है और किसी भी देश में एक क्रांति को शत–प्रतिशत समर्थन भी प्राप्त नहीं होता है।

### *1857 के विद्रोह का विकासः*

इस विद्रोह के सम्बन्ध में यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि विद्रोह का प्रारम्भ सर्वप्रथम सैनिकों द्वारा ही किया गया था। तत्कालीन समय में सैनिकों के प्रयोग हेतु नई एनफील्ड राईफलें आई थी। इनमें इस्तेमाल होने वाले कारतूसों के प्रश्न पर सैनिकों में घबराहट फैली हुई थी, क्योंकि इन कारतूसों पर चिकना कागज लगा हुआ था, जिसे राईफल में डालने से पूर्व मुंह से काटना पड़ता था। सैनिकों को सूचना मिली थी कि इन पर गाय व सुअर की चर्बी लगी हुई है। भारत में सैनिकों को इनका प्रयोग करने में यह आपत्ति थी कि हिन्दू गौ हत्या के विरुद्ध थे, इसलिए गाय की चर्बी को छूना नहीं चाहते थे। सरकार ने इस घटना की जांच करवाई, जिसमें यह तथ्य उजागर हुआ कि कारतूसों पर इस तरह की चर्बी लगाई गई थी।[16]

सैनिकों को यह सूचना 'मातादीन' नामक व्यक्ति ने दी थी, जो हिन्दू धर्म में अछूत समझी जाने वाली भंगी जाति से सम्बन्ध रखता था।[17]

इस तथ्य के सम्बन्ध में जानकारी उस पत्र से प्राप्त होती है, जो 70वीं॰ बंगाली पल्टन के कैप्टन राईट ने दमदम के मेजर बॉन्टीन के नाम 22 जनवरी 1857 को लिखा था, जिसमें कहा गया था कि नं॰ 2 पल्टन के एक ब्राह्मण सिपाही से जब मातादीन ने पानी पीने के लिए बर्तन मांगा था तो उस ब्राह्मण सिपाही ने अछूत जाति से सम्बन्धित होने के कारण उसे बर्तन देने से इन्कार कर दिया था। इस प्रतिक्रिया के विरोधस्वरूप तब मातादीन ने कहा था कि, 'बहुत जल्द ही तुम्हारे ब्राह्मणवाद पर आघात होगा, जब तुम गाय व सुअर की चर्बी लगे कारतूसों

को मुंह से काटकर बंदूकों में भरकर चलाओगे।'

सैनिकों द्वारा मातादीन की बात को इसलिए भी प्रमाणिक माना गया था, क्योंकि वह दमदम के उस कारखाने में काम करता था, जहां इन कारतूसों को निर्मित किया जाता था। इस घटना के परिणामस्वरूप मातादीन को फांसी दी गई।[18]

मातादीन का वक्तव्य सैनिक छावनियों में फैल जाने से भारतीय सैनिकों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। इस प्रकार कुछ विद्वानों ने मातादीन को महान कहा है, क्योंकि उसी ने ही सर्वप्रथम सैनिकों को विद्रोह के लिए प्रोत्साहित अर्थात भड़काया था। यदि वह सैनिकों को गाय व सुअर की चर्बी लगे कारतूसों के सम्बन्ध में जानकारी नहीं देता तो शायद ही 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण हुआ होता?

26 फरवरी 1857 को बुरहानपुर की 19वीं॰ नेटिव इन्फैंट्री ने इन एनफील्ड राईफलों को इस्तेमाल करने से इंकार कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप इस रेजिमेंट को मार्च में भंग कर दिया गया। मार्च में 34वीं॰ बंगाल नेटिव इन्फैंट्री के सैनिक मंगल पांडे ने अपने सार्जेंट मेजर हयूसन पर गोली चला दी, जिसके फलस्वरूप उसे फांसी दे दी गई तथा इस रेजीमेंट को भी भंग कर दिया गया। 7वीं॰ अवध रेजीमेंट के जवानों ने भी अपने अफसरों के आदेश मानने से इंकार कर दिया। इस रेजीमेण्ट का भी वही हश्र हुआ, जो अन्य दोनों रेजीमेण्टों का हुआ था।[19]

मेरठ में विद्रोह की शुरूआत 6 मई 1857 को ही हो गई थी। 6 मई को एक अंग्रेज पदाधिकारी ने एक भारतीय सैनिक टुकड़ी को चर्बी वाले कारतूस के प्रयोग का आदेश दिया, टुकडी में 90 सैनिक थे, जिनमें से 85 सैनिकों ने कारतूसों को दांत से छीलने से इंकार कर दिया। 9 मई को विद्रोही सैनिकों को बुलाया गया। उनके हथियार छीन लिए गए। उनकी वर्दी उतार दी गई तथा उन्हें दस वर्ष की सजा देकर जेल में बन्द कर दिया गया। विद्रोहियों का अपमान भरी सभा में किया गया, इसे देखकर अन्य सैनिकों ने भी विद्रोह कर दिया।[20] 10 मई 1857 को सिपाहियों ने मेरठ में अपने अंग्रेज अफसर का आदेश मानने से इंकार कर दिया था और उनकी हत्या कर दी थी तथा 11 मई 1857 को सिपाहियों का एक दल यमुना पार कर दिल्ली पहुंचा। उग्र सिपाहियों ने दिल्ली पहुंचकर कम्पनी के राजनीतिक एजेन्ट साईमन फ्रेजर सहित अनेक अंग्रेज पदाधिकारियों की हत्या कर दी और उनके कार्यालयों को भी नष्ट कर दिया। इस तरह सत्ता के केन्द्र और प्रतीक के रूप में दिल्ली पर कब्जे के साथ इस विप्लव का प्रारम्भ हुआ।[21]

मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को दिल्ली के लाल किले में जब विद्रोहियों की इन गतिविधियों के विषय में ज्ञात हुआ, तब वे चकित रह गए थे। वे स्वयं भी अंग्रेजों से नाराज थे, क्योंकि कम्पनी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी पेंशन बन्द कर दी जाएगी और उनके वंशजों को सम्राट की पदवी से भी वंचित कर दिया जाएगा, परन्तु फिर भी वे काफी संकोच व अनिच्छा से विद्रोहियों का नेतृत्व सम्भालने को तैयार हुए।[22] जिसके परिणामस्वरूप सभी आदेश सम्राट के नाम पर जारी किए गए तथा सिक्के भी उनके नाम पर ढाले गए। स्थान–स्थान पर विद्रोह मुगल शासक के नाम पर हुए, मराठा सरदार नाना साहिब ने स्वयं को मुगल सम्राट का पेशवा घोषित किया। इसका एक कारण यह था कि लोगों के दिल में मुगल वंश के प्रति निष्ठा थी और उनके नाम पर विद्रोह करने से अधिक समर्थन मिलने की आशा थी।[23]

उत्तर–पश्चिमी प्रांत में बुलन्दशहर, मेरठ, मुजफ्फरनगर तथा सहारनपुर जिलों पर हुए शोध कार्य से यह तथ्य सामने आया है कि बुलन्दशहर, मध्य दोआब तथा रूहेलखण्ड के मध्य स्थित था। यहां मालगढ़ का जमींदार 'मोहम्मद वालीदाद खां' विद्रोहियों के नेता के रूप में उभरा। 1824 में उसके पिता की मृत्यु के पश्चात उनकी सम्पत्ति ब्रिटिश सरकार ने हथिया ली थी। इस प्रकार उसे ब्रिटिश सरकार की राजस्व नीति व कानूनों का शिकार होना पड़ा था। 3 मई को उसे मुगल शासक बहादुरशाह जफर के दरबार में बुलाया गया और यमुना पार के क्षेत्र में अपनी सत्ता स्थापित करने का आदेश दिया। कुछ ही समय पश्चात समस्त दोआब क्षेत्र में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध विद्रोह होने लगे, जिसके परिणामस्वरूप विद्रोह की चिंगारी बिजनौर, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर तथा सहारनपुर के क्षेत्रों में भी फैल गई।[24]

मेरठ के उत्तर में बड़ौत तहसील के बिजनौर गांव का जमींदार 'शाहमल' विद्रोहियों का नेता था। उसने 12 मई 1857 को विद्रोह कर सर्वप्रथम एक अंग्रेजी व्यापारियों के काफिले को लूटा और तत्पश्चात बड़ौत तहसील के कार्यालय पर हमला करके उसे नष्ट कर दिया। शाहमल के समर्थक रातों को गावों में जाकर लोगों को अंग्रेजों के विरुद्ध उकसाते थे,[25] जिसके परिणामस्वरूप जुलाई के मध्य में बड़ौत में अंग्रेजी कम्पनी को शाहमल के विरूद्ध युद्ध में सफलता मिली, जिसमें शाहमल मारा गया।[26]

लखनऊ में 30 मई को विद्रोह हुआ, क्योंकि यहां के अपदस्थ नवाब के प्रति लोगों में निष्ठा थी। नवाब कलक्ता में कैद था और लोग उन्हें अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति का शिकार मानते थे। ऐसी परिस्थितियों को नियंत्रित करने में हेनरी लॉरेन्स व अन्य अंग्रेजी पदाधिकारी असफल रहे। लखनऊ के विद्रोह से प्रेरित होकर सीतापुर, फैजाबाद, गोंडा व सुल्तानपुर इत्यादि में विद्रोह होने लगे और जून के अन्त तक विभिन्न जिलों के विद्रोही लखनऊ की ओर बढ़ने लगे। 30 जून 1857 को विद्रोही और अंग्रेजी सेना के मध्य हुए 'चिनहट के युद्ध' में अंग्रेजी सेना पराजित हुई। सभी अंग्रेज पदाधिकारियों ने लखनऊ रेजीडेन्सी में शरण ली और अगस्त के प्रथम सप्ताह में अपदस्थ नवाब वाजिद अली शाह के नाबालिक पुत्र बिरजीस कादिर को लखनऊ का वली घोषित कर दिया। यह भी स्पष्ट हुआ कि राजकार्य में नए वली की माता बेगम हजरत महल प्रमुख भूमिका निभाएगी और वे मुगल सम्राट की प्रभुसत्ता को भी स्वीकार करेंगे।[27]

5 जून 1857 को अंतिम मराठा पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र नाना साहिब के नेतृत्व में कानपुर में विद्रोह प्रारम्भ हुआ। 1851 में बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के पश्चात उन्हें पेंशन से वंचित कर दिया और पूना से भी निकाल दिया, जिसके उपरान्त उन्हें कानपुर में निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा। उन्होंने अंग्रेजों से अपना संघर्ष जारी रखा और अन्त में नेपाल चले गए। तांत्या टोपे उनके दक्ष सहायक के रूप में उभरे। वे 1859 तक अंग्रेजों से गुरिल्ला युद्ध करते रहे, लेकिन एक जमींदार ने उसे धोखा देकर उसका पता अंग्रेजों को बता दिया था, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें पकड़कर फांसी दे दी गई थी।[28]

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को भी कम्पनी की विस्तारवादी नीति का शिकार होना पड़ा था। लॉर्ड डलहौजी ने उनके दत्तक पुत्र दामोदर राव को उनके पति का उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया था और विलय की नीति के तहत उनके राज्य को छीन लिया था। उन्होंने इसके सम्बन्ध में अंग्रेजों से बातचीत भी की कि यदि उनकी मांगें मान ली जाए तो वह विद्रोह में अंग्रेजों का साथ देंगी और इस तरह झांसी की तरफ से उन्हें कोई खतरा भी नहीं रहेगा, लेकिन अंग्रेज पदाधिकारियों ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया। तब रानी लक्ष्मीबाई ने सैनिकों

का नेतृत्व कर मार्च 1858 में अंग्रेजों को कड़ी टक्कर दी और अन्ततः वीरगति को प्राप्त हो गई।[29]

बिहार में जगदीशपुर के जमींदार कुंवर सिंह ने विद्रोह का नेतृत्व किया। उनकी जमींदारी भी कम्पनी की नीतियों के कारण छीन गई थी। उन्होंने भी अपने रोष की अभिव्यक्ति विद्रोह में कूद कर की और 26 अप्रैल 1858 को वे मृत्यु को प्राप्त हो गए थे।

जून 1857 के मध्य तक ग्वालियर, नौगांव व बांदा तक और जुलाई 1857 में इन्दौर तक विद्रोह की चिंगारी फैल गई थी। 30 जुलाई 1857 को रानीगंज में 8वीं॰ नेटिव रेजीमेंट ने विद्रोह कर अंग्रेजों की हत्या की, उनके खजाने को लूटा तथा जेल से कैदियों को रिहा किया। जैसे–जैसे विद्रोह विभिन्न भागों में फैल रहा था, लोग दिल्ली की ओर बढ़ रहे थे। 8 जून तक ही कम्पनी की सेना दिल्ली की सीमा पर पहुंच पाई। 20 सितम्बर 1857 को ही कम्पनी की सेना ने दिल्ली पर अधिकार कर मुगल शासक बहादुरशाह जफर को गिरफ्तार कर उस पर मुकदमा चलाया और उसे सजा देकर बर्मा भेज दिया।[30]

अंग्रेजों का दिल्ली पर अधिकार हो जाने से विद्रोहियों के हौंसले कमजोर पड़ने लगे। दिल्ली पर अंग्रेजों का अधिकार होने के पश्चात लखनऊ विद्रोहियों का केन्द्र बना, लेकिन मार्च 1858 में ही अंग्रेज लखनऊ पर अधिकार कर पाए। इस तरह धीरे–धीरे लगभग सभी क्षेत्रों पर अंग्रेजों ने अपना अधिकार कर लिया था।

1857 की क्रांति जितनी तीव्रता के साथ आरम्भ हुई थी, उतनी ही जल्दी समाप्त भी हो गई थी। यह सही है कि क्रांतिकारियों ने अपने लक्ष्य की पूर्ति हेतु काफी प्रयास किए, परन्तु वे सफल नहीं हो सके। जब हम 1857 के विप्लव पर दृष्टिपात करते हैं तो कह सकते हैं कि यह क्रांति पूर्णतः विफल नहीं रही। भले ही अंग्रेजी हुकूमत समाप्त न हुई हो, परन्तु इसके परिणाम भारतीयों व अंग्रेजों दोनों पर ही पड़े।

### *सन्दर्भ ग्रन्थ सूची*


1.एस॰ एन॰ सेन, 1857, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 1957, पृ॰ 145
2.बी॰ एल॰ ग्रोवर, आधुनिक भारत का इतिहास, एस॰ चन्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 1985, पृ॰ 188
3.वी॰ डी॰ सावरकर, द इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस, राजधानी ग्रन्थाकार, नई दिल्ली, 1970, पृ॰ 262
4.भरत मिश्र, 1857 की क्रांति और उसके प्रमुख क्रांतिकारी, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1992, पृ॰ 10
5.पी॰ ई॰ रॉबर्ट, ब्रिटिश कालीन भारत का इतिहास, एस॰ चन्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 1969, पृ॰ 274
6.आर॰ सी॰ मजूमदार, ब्रिटिश पैरामाउन्टसी एण्ड इंडियन एम्पायर, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, 1974, पृ॰ 289
7.एस॰ एन॰ सेन, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 414
8.रजनी पामदत्त, आज का भारत, मैकमिलन कम्पनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, 1977, पृ॰ 107–10
9.एस॰ बी॰ चौधरी, थ्योरीज ऑफ इंडियन म्यूटिनी 1857–59, वर्ड प्रेस, कलक्ता, 1965, पृ॰ 388
10.एस॰ एन॰ सेन, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 115
11.वही, पृ॰ 117
12.आर॰ सी॰ मजूमदार, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 410
13.वही, पृ॰ 417–18
14.वही, पृ॰ 216–19
15.तारा चन्द, भारत का स्वतंत्रता संग्राम, भाग–2, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, 1997, पृ॰ 100
16.आर॰ एल॰ शुक्ल, आधुनिक भारत का इतिहास, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2003, पृ॰ 243
17.मोहन दास नैमिशराय, स्वतंत्रता संग्राम के दलित क्रांतिकारी, दलित साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1989, पृ॰ 40
18.राजेन्द्र प्रसाद जैन, 1857 का विप्लव और शाह जफर, गोपाल प्रकाशन, मेरठ, 1985, पृ॰ 73
19.विपिन चन्द्रा, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1991, पृ॰ 2
20.भरत मिश्र, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 26
21.विपिन चन्द्रा, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 1
22.एस॰ एन॰ सेन, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 134
23.बी॰ एल॰ ग्रोवर, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 180
24.आर॰ एल॰ शुक्ल, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 245
25.वही
26.डॉ॰ राम विलास शर्मा, 1857 की क्रांति, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1957, पृ॰ 267
27.वही
28.बी॰ एल॰ ग्रोवर, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 181
29.विपिन चन्द्रा, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 3
30.आर॰ एल॰ शुक्ल, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 249

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,
We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.net